ROHTAS MAHILA College SASARAM
Department OF-History - Subsidiary
16-05-2020 B.A.I. [2019-20]
Dr. Satyajeet Sarang [NOTES]

मौर्य साम्राज्य के पतन के कारण :-

★ अशोक के बाद अगले 50 वर्ष तक उसके उत्तराधिकारियों का कमजोर शासन चलता रहा। अशोक के बाद कुणाल शासक बना [पुराण], जिसे दिव्यावदान में 'धर्मविवर्धन' कहा है। राजतरंगिणी के अनुसार उस समय जालौक कश्मीर का शासक था।

मौर्य साम्राज्य जैसे विस्तृत साम्राज्य के पतन के लिए किसी एक कारण का होना पर्याप्त नहीं है। स्पष्ट साक्ष्यों के अभाव में विद्वानों ने अलग-अलग कारण प्रस्तुत किये हैं।

इतिहासकार — पतन के कारण

1. हरप्रसाद शास्त्री — धार्मिक नीति [ब्राह्मणों]
2. हेमचन्द्र राय चौधरी — अहिंसक एवं शान्तिप्रिय नीति
3. डी० डी० कौसाम्बी — आर्थिक कारण [संकट ग्रस्त अर्थव्यवस्था]
4. डी० एन० झा — कमजोर उत्तराधिकारी
5. रोमिला थापर — [1] केन्द्रीय प्रशासन
[2] अधिकारी तन्त्र का अप्रशिक्षित होना

मौर्य प्रशासन

मौर्य प्रशासन के अन्तर्गत ही भारत में पहली बार राजनीतिक एकता देखने

को मिली। सत्ता का केन्द्रीकरण राजा में होते हुए भी वह निरंकुश नहीं होता था मौर्यकाल में गणराज्यों का ह्रास होने लगा था जिसके परिणाम स्वरूप राजतन्त्रात्मक व्यवस्था की स्थिति मौर्यकाल में काफी मजबूत हो रही थी।

कौटिल्य ने राज्य के सप्तांग सिद्धांत के सात अंग निर्दिष्ट किये हैं— राजा, अमात्य, जनपद, दुर्ग, कोष सेना और मित्र। साम्राज्य में मुख्यमंत्री एवं पुरोहित की नियुक्ति उनके चरित्र की भली — भाँति जाँच के बाद की जाती थी, जिसे 'उपधा परीक्षण' कहा जाता था।

★ केन्द्रीय प्रशासन :— अर्थशास्त्र में शीर्षस्थ अधिकारियों को 'तीर्थ' कहा गया है इनकी संख्या अठारह थी। अधिकतर स्थलों पर इन्हें महामात्य की संज्ञा दी गई है। सबसे महत्वपूर्ण तीर्थ या महामात्य मंत्री और पुरोहित थे। इनका साम्राज्य के अन्य अधिकारियों पर स्पष्ट नियंत्रण होता था।

★ युक्त तथा उपयुक्त :— ये केन्द्रीय महामात्य तथा अध्यक्षों के नियंत्रण में निम्न स्तर के कर्मचारी होते थे।

★ प्रान्तीय शासन :— चन्द्रगुप्त मौर्य ने शासन की सुविधा हेतु अपने विशाल साम्राज्य को चार प्रान्तों में

विभाजित किया। इन प्रान्तों को चक्र कहा जाता था।

इन प्रान्तों का शासन सीधे सम्राट द्वारा नियंत्रित न होकर उसके प्रतिनिधि द्वारा संचालित होता था।

★ अशोक के समय में प्रान्तों की संख्या चार से बढ़कर पाँच हो गई।

इन प्रान्तों का विवरण निम्नलिखित है-

★ प्रान्तों का शासन राजवंशीय 'कुमार' या आर्यपुत्र' नामक पदाधिकारियों द्वारा होता था। अशोक सिंहासनारूढ़ होने से पूर्व उत्तरापथ एवं अवन्ति का कुमार' रह चुका था।

धर्म :- ★ मौर्यकाल में वैदिक धर्म प्रचलित था किन्तु कर्मकाण्ड प्रधान वैदिक धर्म अभिजात ब्राह्मण तथा क्षत्रियों तक ही सीमित था।

पंतजलि :- के अनुसार मौर्यकाल में देवमूर्तियों को बेचा जाता था। देवमूर्तियों को बनाने वाले शिल्पियों को 'देवता कारु' कहा जाता था।

व्यापार :- मौर्य काल में व्यापार जल एवं स्थल दोनों मार्ग से होता था आन्तरिक एवं वैदेशिक व्यापार उन्नतावस्था में था।

★ आर्थिक व्यवस्था :- वास्तव में मौर्यकाल में पहली बार राजस्व प्रणाली की रूप रेखा तैयार की गई इसका उल्लेख कौटिल्य के अर्थशास्त्र में भी मिलता है।